॥ श्री जिनेन्द्रायनमः ॥

कलयुगलीला भजनावली

१

तर्ज़ ॥ इलाजे दर्द दिल तुमसे मसीहा हो नहीं सकता ॥

अथ श्रीजिनेन्द्रदेवकी स्तुती ।

काल कलियुगसे व्याकुल हो तेरी सरकारमें आए ।
लिया शरना तेरा स्वामी तेरे दरबारमें आए ॥ १ ॥
इसी कलजुगके हाथों से जो दुख हमने उठाए हैं ॥
न वह तहरीरमें आए नहीं गुफ़तारमें आए ॥ २ ॥
न भाइयोंमें वफ़ादारी न यारोंमें रही यारी ॥
मोहब्बत उठ गई सारी लोभ हंकारमें आए ॥ ३ ॥
काल पर काल पड़ते हैं कि लाखों भूक मरते हैं ।
पापका भार सरधरके सभी अदबारमें आए ॥ ४ ॥
कहीं चोरी ज़िनाकारी कहीं हिंसा झूठ भारी ।
नजर आया यही कलयुग कि जिस बाज़ारमें आए ॥ ५ ॥

कभी हैज़ा कभी ताऊन है लाखों मुसीबत हैं ।
समझमें कुछ नहीं आता कि किस आज़ारमें आए ॥ ६ ॥
तू है तारण तरण हमने सुना है जैनशासनमें ॥
यही सुनके यक़ीं लाए तेरे दरबारमें आए ॥ ७ ॥
हितू तुजसा नहीं कोई मिला जग छानकर देखा ॥
अनादी कालसे हमहैं इसी संसार में आए ॥ ८ ॥
नाग गज छाग भील और बाघ सब तुमने उभारे हैं ।
हमारी भी खबर लेना तेरी सरकार में आए ॥ ९ ॥
कहै न्यामत झुका सरको करो कल्यान भारत का ।
रखेंगे याद क्या हम भी तेरे दरबार में आए ॥ १० ॥

२

तर्ज़ ॥ देखो करके ख़याल किया कैसा कमाल ।
वही हूं मैं रमाल आके पहुंचा यहां ॥

अथ राजा चन्द्रगुप्त का कलयुग के आदमें सोला स्वप्ने देखना और श्री स्वामी भद्रबाहुजी श्रुतकेवली महराजसे स्वप्नों का फल पूछना ॥

सुनये सुनये सरताज । भद्रबाहु महाराज ॥
बड़ी चिन्ता है आज । नहीं दिलको क़रार ॥ १ ॥
एक पिछली सी रैन । मैं जो करता था शैन ॥
हुवा इक दम बेचैन । सोला स्वप्ने निहार ॥ २ ॥
मैंने देखा यह ढंग । कल्प तरवर उतंग ॥

वाकी शाखा थी भंग । छुपा सूरज का सार ॥ ३ ॥
पड़े चन्दामें छेद । नागफन बारा भेद ॥
हुवा मन मेरे खेद । ऐसी बातें निहार ॥ ४ ॥
देवता के विमान । फिरे उलटे निशान ॥
हेम थालीमें स्वान । लखे करते आहार ॥ ५ ॥
उगे करदमपे फूल । पड़े हीरों में धूल ॥
गया सुध बुध मैं भूल । कपी गजपे सवार ॥ ६ ॥
मुझे है खूब याद । तजी सागर मरजाद ॥
नाचे व्यंतर हो शाद । चमके जुगनू अपार ॥ ७ ॥
सूका सरवर तमाम । थोड़ा जल एक ठाम ॥
लड़े गज दोऊ शाम । मार मार चिंघार ॥ ८ ॥
था शुतरपे सवार । एक राज कंवार ॥
छोटे *गय्याके बार । खैंचेंथे रथका भार । ९ ॥
कहिये स्वप्नों का हाल । था यह कैसा जंजाल ॥
मिटे दिलका मलाल । करो मेरा उद्धार । १० ॥
सुनो बालो गोपाल । है यह कलयुग विकाल ॥
बिछा धोके का जाल । जरा रहना होशयार ॥ ११ ॥
वरना करलो ख़याल । होगी मुशकिल कमाल ॥
इसकी टेढ़ी है चाल । कहे न्यामत पुकार ॥ १२ ॥

३

तर्ज़ ॥ सदा नहीं रहनेका मेरी जान हुसन पर यूंहीं अकड़ते हो ।

आगया कलजुग का पहरा पाप जो बढ़ते जाते हैं ॥ टेक ॥

*-गौके छोटे बछड़े

चन्द्रगुपत राजा को सोला स्वप्ने आते हैं ॥
फल उनके परत्यक्ष आज नज़रोंमें आते हैं ॥
सुनो तुम सब देकरके कान हाल सारा बतलाते हैं ॥ १ ॥
कलप वृक्ष नहीं रहे नामको देखो आंख पसार ॥
तप संजम सब गया गया है उत्तम कुल आचार ॥
छोड़दी जिनशासनकी आन इसीसे सब दुख पाते हैं ॥ २ ॥
सूर्य्य ज्ञानका छुपा चहूं दिश छागया तम अज्ञान ॥
पूर्वांगका पाठी कोई मिलता नहीं सुजान ॥
आज भारत के पीरो जवान । सभी मूरख कहलाते हैं ॥ ३ ॥
धर्म चन्द्रमें पड़े हुवे जो देखे छिद्र अनेक ॥
नए कुमत जारी हो निकलें पन्थ समाज अनेक ॥
मिचा है कुछ ऐसा घमसान नहीं गिनतीमें आते हैं ॥ ४ ॥
बारा फणका नाग एक जो देखा पिछली रैन ।
बारावरस का पड़ा काल विकाल महा दुखदैन ॥
कालका है खटका हरआन जलाशय सूख जाते हैं ॥ ५ ॥
सुर खेचर चारण मुनि सारे तज गए भारत देश ।
परजा पर इस कलजुगमें है छागया घोर कलेश ॥
फिरे हैं उलटे देव बिमान कहीं नजरों नहीं आते हैं ॥ ६ ॥
हेम पात्रमें स्वान लखे राजाने करत अहार ॥
उत्तम कुलकी सुघर बालिका विलसें हीनाचार ॥
हुई पैदा कायर संतान गुलामी कर कर खाते हैं ॥ ७ ॥
करदम ऊपर हरे फूलते देखे सुंदर फूल ॥

क्षत्री ब्राह्मण वंशमें नहीं रहा धरमका मूल ॥
रहा कुछ वैश वंशमें आन सो वहभी हारे जाते हैं ॥ ८ ॥
कपी एक जो देखा उसने हाथी पर असवार ॥
राज करेंगे गोरांगी वह सारे देश मंझार ॥
धरेंगे सर के ऊपर आन। जो क्षत्री कहलाते हैं ॥ ९ ॥
सागर देखा आप लोपता जो अपनी मरजाद ॥
सो ही राजा लोप करेंगे जैनधर्म मरजाद ॥
करैं पशु पंखी का संघार दया दिलमें नहीं लाते हैं ॥ १० ॥
व्यंतर नाचत लखे नीच देवोंका होगा ज़ोर ॥
भैरूं गूगा सेढ मसानी पीर फकीर और घोर ॥
बने देखो क्या क्या तूफ़ान समझ में कुछ नहीं आते हैं ॥ ११ ॥
जुगनू चमकत लखे बढ़ा मिथ्यात पंथ परचार ॥
सतासत्य निर्णय नहीं होता मन माना व्योहार ॥
हुई है जैन धरमकी हान। कुपथ बढ़तेही जाते हैं ॥ १२ ॥
सरवर सूका लखा लखा थोड़ा सा जल एक ठाम ॥
सिद्ध क्षेत्रमें धरम न होगा होगा बद अंजाम ॥
रहै कुछ धर्म दकन असथान। गुरू ऐसा फरमाते हैं ॥ १३ ॥
गज लड़ते दो लखे लड़ैं थे मार मार चिंघार ॥
धनकी खातिर इस कलजुगमें मारे फिरे नर नार ॥
छोड़ बैठेंगे धरम ईमान। लोभ कर कर दुख पाते हैं। १४ ॥
ऊंट चढ़ा एक राजपुत्रको देखा करत विहार ॥
धर्म छोड़ हिंसकहो राजा खेलन जाएं शिकार ॥

कहां है दया धर्म परधान । रात दिन पाप कमाते हैं ॥ १५ ॥
रथ खींचत देखे दो बछड़े नहीं करैं फरयाद ॥
बालपने कुछ धर्म करेंगे तरुण भए परमाद ॥
हरो परमाद श्री भगवान । सभी तेरा जशगाते हैं ॥ १६ ॥
जो फल भाषाथा भगवन ने बीत रहा है सोय ॥
न्यामत रहना संभल कलीमें सब अनहोनी होय ॥
शरन लेलो निजमतिकी आन । कली सर चढ़ते आते हैं । १७ ।

४

तर्ज़ ॥ जाओजी जाओ किस नादानको सिखलाने आए ॥

अपनी बिपत महाराजको सुनाने आये ।
हाल जिताने आयें । दुक्ख मिटाने आये ॥
आनन्द पाने आए । भ्रम मिटाने आए ॥
हे जिनराज अपनी लाचारी दिखलाने आए ॥ अपनी० ॥
अहो विक्राल कलूकाल है यह आया कैसा ॥
पातक घोर चहूंओर है यह छाया कैसा ॥
फिरते हैं मारे मारे । धर्म सभोंने हारे ॥
पाप करैं हैं भारे । मूरख बने हैं सारे ॥
हो रहे अंधे-विषयानंदे-कलजुग फंदे-न्यामत बंदे ॥
दुख अपना जितलाने आए ॥ अपनी० ॥

५

तर्ज़ ॥ फिट लानत तेरी समाजको जिन धर्म कर्म सब खोया ॥
यह चाल खड़तालपर गाई जाती है ॥

कलजुगने भारत देशमें यह कैसा शोर मचाया ॥ टेक ॥

सत्य धर्म का नाश कराया। उलटा अपना पंथ चलाया॥
हिंसाहीमें धर्म बताया॥ त्याग दिया कुल कानको॥
मिथ्या मारग दिखलाया॥ १॥
सतियोंका सत धर्म मिटाया। पापी ने बिभचार फैलाया॥
ग्यारा पतीका हुक्म सुनाया। खो दिया ज्ञान और ध्यानको।
भारतका नाश कराया॥ २॥
विद्या पढ़ने को पति जावे। छै बरस लग लौट न आवे॥
नारी औरसे गरभ धरावे। लानत उस शैतानको॥
जिन ऐसा कर्म बताया॥ ३॥
पूजा पाठ सभी छुड़वाए। दया धरमसे जीव हटाए॥
नील गाय मारन बतलाए। न्यामत हिन्दुस्तानको॥
यह क्या दुशकरम सिखाया॥ ४॥

६

तर्ज़॥ जपो नित ओंकार प्यारे॥

नींदसे जागो मतवारे। लुटा जाता है धरम प्यारे। नींद०। टेक॥
नींद अविद्या छागई प्यारे छायो कलयुग घोर।
कलजुगि पापी जीव बहु प्यारे जुर आए चहुं ओर॥
धरमकी घात करन हारे॥ १॥
ब्रहमण शूद्रों को किया प्यारे किया जाटको वैश॥
उलट पुलट ऐसी करी प्यारे बिगड़ा भारत देश॥
नाश करदिये बरण सारे॥ २॥
सूत्र स्मृती छोड़दी प्यारे छोड़े न्याय अरु भाश॥

हिंसक पुस्तक रचदिई प्यारे कर मिथ्या परकाश ॥
वेदके अर्थ बदल डारे ॥ ३ ॥
ब्रह्मचर्यका नाश कर प्यारे फैला दिया बिभचार ।
विध्वावोंके न्योगका प्यारे खोल दिया भंडार ॥
नारके पती किये ग्यारे ॥ ४ ।
जप पूजन खंडन किये प्यारे खंडन किये पुराण ॥
भंडा भोग नियोगको प्यारे तजी जात कुल आन ॥
न्याय मारगसे हुवे न्यारे ॥ ५ ॥

७

तर्ज़ ॥ सुनले बीबी बातें मेरी कान लगा कर तू झट पट ॥
यह नाटककी चाल है इसे चलत में गाना चाहिये ॥

सुनलो साहब बात हमारी ध्यान लगाकर तुम झट पट ॥
कलजुगमें लाखों मत निकले मिचादेई सारे गट पट ॥ टेक ॥
ब्रह्म समाजी शांत समाजी आर्य समाजी सौ अट बट ॥
मास पार्टी घास पार्टी क्या जाने क्या २ सट पट ॥ १ ॥
कूंडा पंथी ऊंडा पंथी निकल पड़े इक दम चट पट ॥
खंडन मंडन करते फिरते आपसमें होरहे लटपट ॥ २ ॥
नेचरी निकले दहर्ये निकले निकले सब ऐसे नट खट ॥
मूंहसे कहें करो सब प्रीति रखते हैं निश दिन खट पट ॥ ३ ॥
कलजुगने है धर्म बिगाड़ा सबका देखो क्या झट पट ॥
मुसलमान हिंदू भी अकसर मद्रा पीते हैं गट गट ॥ ४ ॥
लम्बे चौड़े ऊंचे नीचे लैकचर देते हैं चट चट ॥

उलटी टेढ़ी बातें सुन खुश हो ताली पीटें पट पट ॥ ५ ॥
व्रत और पूजा नमाज़ रोज़ा सुन लैक्चर छोड़ें झट पट ॥
पैटलून और बूट चढ़ाकर काते फिरते हैं खट पट ॥ ६ ॥
वाहरे कलजुग तेरी महिमा खूब दिखाई तैं लट पट ॥
मुसलमान ईसाई हिंदू सबको कर दिया है गट्ट मट ॥ ७ ॥
भक्ष अभक्ष मिलै जो कुछ बे पूछे कर जावैं चट पट ॥
न्यामत ऐसे कलजुगके नए फ़िरकोंसे रहना हट हट ॥ ८ ॥

८

तर्ज़ कवाली ॥ इलाजे दर्द दिल तुमसे मसीहा हो नहीं सकता ॥

यह कैसा काल कलजुग है बनी सब सूरतें ग़मकी ॥
दरोदीवारसे आने लगी आवाज़ मातमकी ॥ १ ॥
कभी भूकम्प है जारी कभी दुरभिक्ष बीमारी ॥
मुसीबत है बड़ी भारी लगी है सोच हरदम की ॥ २ ॥
किरोड़ों गौ यहां पै रात दिन आंसू बहाती हैं ॥
नहीं सुनता कोई फ़रयाद उनके चश्म पुरनम की ॥ ३ ॥
जहालत मुल्कमें फैली है विद्या होगई रुखसत ।
मुहब्बत प्यारके बदले लड़ाई फूट आ चमकी ॥ ४ ॥
ज़िनाकारी कि मय ख्वारी कि बदकारीकी कसरत है ।
धर्म और कर्म की बातें सबोंने एक दम कम की ॥ ५ ॥
कहे न्यामत सुनो भाई तजो परमाद निद्राको ।
करो कुछ धर्म कलजुगमें उमर है बून्द शबनमकी ॥ ६ ॥

९

तर्ज़ कवाली ॥ क़त्ल मत करना मुझे तेगा तबर ले देखना ॥

हाथसे कलजुगके दामनको छुड़ाना चाहिये ।
धर्ममें जिन राजके मनको लगाना चाहिये ॥ १ ॥
भाई भाई में नहीं झगड़ा उठाना चाहिये ।
लड़ झगड़ करके अदालतमें न जाना चाहिये ॥ २ ॥
बाप माको गालयां देतेहो करते हो गज़ब ।
धर्मका भी तो तुम्हें कुछ खौफ़ खाना चाहिये ॥ ३ ॥
षट करमको छोड़ कर शतरंज जूवा खेलते ।
इस समझपे आपके आंसू बहाना चाहिये ॥ ४ ॥
रंडी भड़वोंको नचाकर किस लिये खोते हो धन ।
व्यर्थ व्यय को छोड़कर कोलिज बनाना चाहिये ॥ ५ ॥
न्यायमत कलजुग चला आता है जल्दी से हमें ।
कोहे पारशनाथके दर्शनको जाना चाहिये ॥ ६ ॥

१०

तर्ज़ ॥ क्यों न लीनी खबरया हमारी रे ॥

चेतो चेतो चेतनवां अनारी रे । टेक ॥
कलजुगने अपना जाल बिछाया है आनके ।
फंसता है इसमें किस लिये तू आप जानके ॥
देखो होगी खराबी तुम्हारीरे । चेतो० ॥ १ ॥
रंडीनचा अय्याश ज़माना बना दिया ।

ब्याह काज भूर फैंकमें धनको लुटा दिया।
अबतो फिरते हो होके भिखारीरे। चेतो०।२।
वृथा छल कपट करता है यहां बात बात में।
निश दिन लगा रहता है मुकदमोंकी घातमें॥
दुख पावेगा बहुता अगारी रे॥३॥
विद्या विहीन होके जहालत में आगए॥
बादल मुसीबतोंके हैं भारत पे छा गए॥
कैसी फूटी है किसमत तुम्हारी रे॥४॥
अर न्यायमत परमाद को जल्दी हटाइये।
सब मिलके पार धर्मका खेवा लंघाइये।
डूबी जाती है नय्या तुम्हारी रे०॥५॥

११

तर्ज़ कव्वाली--यह कैसे बाल हैं बिखरे यह क्या सूरत बनी ग़मकी॥

ज़माना आगया खोटा बदीका काम करते हैं।
धर्म घटताही जाता है पाप दिन रात बढ़ते हैं॥१॥
ज़रासी बातपे भाई यह भाईसे झगड़ते हैं।
अदालत बीच जा करके दो जानिबसे बिगड़ते हैं॥२॥
थमेंगे यह ज़मीन और आसमां किसके सहारे पे।
बहनको भानजीको देख मनमें पाप धरते हैं॥३॥
मात और तातको गाली सुनाते हैं सताते हैं।
नारकी पक्ष हो करके पिता से आप लड़ते हैं॥४॥

बहू बेटी शरम करती नहीं मां बाप सुसरे की ।
यह गाली सीठने देती वह सुन मन हर्ष करते हैं ॥ ५ ॥
खर्ची पेशा रंडियोंका पेशी खर्चा वकीलोंका ।
और सब घटते जाते हैं सिरफ़ यह चार बढ़ते हैं ॥ ६ ॥
बहन बेटी भतीजी देखती रहती हैं बेचारी ।
बुलाकर साले साली उनकी जीमनवार करते हैं ॥ ७ ॥
यह सब करनी के फल जानो पड़े हैं काल बीमारी ।
जवां बेटे बापके सामने आखोंके मरते हैं ॥ ८ ॥
हजारों दुक्ख पाते हैं मगरतो भी न डरते हैं ।
बदी जो जी में आती है वही करके गुज़रते हैं ॥ ९ ॥
पड़े जब आनके सर पे कहें ईश्वर की मरज़ी है ।
समझते क्यों नहीं दिलमें कि हम क्या काम करते हैं ॥ १० ॥
यह नाहक नाम कलजुगका कभी ईश्वरका धरते हैं ।
किसीका दोष क्या न्यामत जो करते हैं सो भरते हैं ॥ ११ ॥

१२

तर्ज़ ॥ होरी काफी ॥

कैसी होरी कहांकी होरी । टेक ।
शैल सिखर माधो बन प्यारी तीरथराज कह्योरी ।
जाहीपर अब बंगले बनत हैं । ऐसो जुलम भयोरी ॥
कभू सुपने ना सुनोरी । कैसी० ॥ १ ॥
खबर सुनत सबको मन कम्प्यो भारी सोच भयोरी ॥
नगर नगर गढ़ ग्राम बगड़से तारंप तार दियोरी ।

शोर भारत में मचोरी । कैसी० । २ ।
पंचन मिल अरदास करी पायनमें सीस धरोरी ।
युक्ती परमान सभी दर्शाए काहू न एक सुनोरी ।
आप मन माना करोरी । कैसी० । ३ ।
सिक्ख मरहटोंका राज रह्यो बादशाहीका राज भयोरी ।
मलका महारानी राज करे थी काहू न ऐसा कियोरी ।
आज यह अचम्भा सुनोरी । कैसी० । ४ ।
कलजुगमें अनहोनी हुई यह काहेको फाग रचोरी ।
न्यामत फागका राग तजो धुर लंदन शहर चलोरी ।
अरज राजासे करोरी । कैसी० । ५ ।

१३

तर्ज कव्वाली—कत्ल मत करना मुझे तेगो तबरसे देखना ।

व्यर्थ व्यय करनेसे यह भारत भिखारी होगया ।
दौर इस कमबख्तका कलजुगमें जारी होगया । टेक ।
थोड़ा थोड़ा बढ़ते बढ़ते छागया कुल देशमें ।
दूर करना अब तो इसका सख्त भारी होगया । १ ।
हाल हम एक कलजुगीमलका सुनाते हैं तुम्हें ।
किस तरहसे सेठ हो करके भिखारी होगया । २ ।
घर दुकांको बेचकर शादी रचाई धूमसे ।
बागवारी लुटगई और सूद भारी होगया ॥ ३ ॥
धूममें धनको लुटा भूके बंगाली बनगए ॥

और अदालतसे समन कुर्क़ी का जारी होगया । ४ ।
एक दो और तीन जब होने लगी कहने लगे ।
हाय यह कैसा सितम है हमपेतारी होगया । ५ ।
थी दुलहन पंद्रा बरसकी और दूलहा आठ का ।
झगड़ा इस अनमेलसे दोनोंमें जारी होगया । ६ ।
एकही शादी में यूं शेखी गई सारी निकल ।
तीन तेरा होगया जीना भी भारी होगया । ७ ।
इस तरह इस व्यर्थ व्ययसे और मूरखताई से ।
जैनमत जो सबसे आगेथा पिछारी होगया । ८ ।
व्यर्थ व्ययको छोड़कर अब धर्ममें धन दीजिये ।
है बजट जिनधर्मके कामोंका भारी होगया । ९ ।
जैनकोलिज खोलना है है अनाथोंकी मदद ।
और सिखरजीका मुक़दमा भी तो जारी होगया । १० ।
शेठ पारशनाथ ले जल्दीसे कोलिज खोलदो ।
करके हिम्मत जैन अनाथालय तो जारी होगया ॥ ११ ॥
काल कलयुग से न्यायमत किस लिये डरते हो तुम ॥
अब तो शाशन ऐडवर्डहफ़तम का जारी होगया ॥ १२ ॥

१४

तर्ज़ ॥ आन पड़ी दरबार ख्वाजा ॥

आन पड़े दरबार स्वामी-आन पड़े हैं-
आन पड़े हैं-आन पड़े दरबार स्वामी ।
तोरे चरणमें समोशरणमें आन पड़े हैं दरबार स्वामी । टेक ।

सुनयो हमारी हे जगवन्धू ॥ हे हितु दीनदयार स्वामी ॥१॥
दुख जल पूरण कलजुग सागर । नय्या पड़ी मंझधार स्वामी २
तीरथ राज इस शैल सिखर पर । बंगलो करत सरकार स्वामी ३
यह सुनकर हम जैनी दलको । उपजो है दुक्खअपारस्वामी ४
आज हमारी राज अधिकारी । कौना सुनत है पुकारस्वामी ५
तुम सुखकारी सब दुख हारी । तुमही हो तारणहार स्वामी ६
यह लख निज दुख टारन कारण लीनी है शर्न तुम्हार स्वामी ७
कीचक अंजन से तुम तारे । लेना हमारी भी संभार स्वामी ८
रक्षा करो अब जैन धरम की । सांची है तेरी सरकार स्वामी ९
न्यामत भारत जात रसातल । वेगी से लो ना उभार स्वामी १०

१५

तर्ज़ ॥ सत्य कभी नहीं हारूं मोरे पंडिता ।

धर्म कभू नहीं हारो मेरे भाई ॥ टेक ॥
धर्म के कारण श्रीरघुराई । त्याग दई थी सियारानी सुखदाई १
सीता सतीजा अगनकुंडमें । कूद पड़ी थी मन शंक न लाई २
धर्म हेत लाखों सतियनने । दुक्ख सहे और जान गंवाई । ३ ।
सेठ सुदर्शन धर्म बचायो । जाए चढ़े ये शूली दुख दाई । ४ ।
बावन रूप कियो विश्नू मुनी । जा बलके घर अलख जगाई ५
मानतुंग मुनी धर्म चलायो । कष्ट सहे बन्दनमें जाई ॥ ६ ॥
कलजुगमें अब शैल सिखर पर । देखो तो कौन बिपाति बनआई ७
जो इस गिर पर बंगले बनेंगे । सगरी ही जैन धरम पत जाई ८

बैठे हो किस सोच फिकरमें। जतन करो झट सब मिल भाई ९
न्यामत तन धन लाज सभी कुछ। एक धरम पर दो हर्पाई। १०।

१६

तर्ज़ ॥ पहलू में यार है मुझे उनकी ख़बर नहीं ॥

कलजुगके धोके जालमें आना नहीं अच्छा।
बद रसमों का दुनियामें फैलाना नहीं अच्छा। १।
यह हिन्द जहालतसे है बरबाद होगया।
अब और इसकी खाक उड़ाना नहीं अच्छा ॥ २ ॥
अब व्यर्थ व्ययको छोड़कर व्योपार बढ़ाओ।
शेख़ीमें आके धनका लुटाना नहीं अच्छा ॥ ३ ॥
क्यों आप अपनी बाग बहारी लुटा रहे।
घर फूंक तमाशेका दिखाना नहीं अच्छा ॥ ४ ॥
विद्या पढ़ा संतानको तहज़ीब सिखाओ।
महफिलमें रंडियों का नचाना नहीं अच्छा ॥ ५ ॥
बस रहने दो यह भूर फैंक बहुत होचुकी।
यूं प्यारे धनको व्यर्थ लुटाना नहीं अच्छा ॥ ६ ॥
अय न्यामत अब धर्मका कुछ काम कीजिये।
आलशमें अपना वक्त गंवाना नहीं अच्छा ॥ ७ ॥

१७

तर्ज़ ॥ देवरया म्हारे खाने के हाथ न लगाना ॥
हमारा खाना बिगड़ जागा रे ॥
(यह गीत स्त्रियां गाती हैं)

भारत के वासी कलजुगकी चालमें न आना।

तुम्हारा काम बिगड़ जावेगा ॥ १ ॥
बाली उमरमें लड़के व लड़की मत ब्याहो ।
तुम्हारा वंश बिगड़ जावेगा ॥ २ ॥
भारत के बासी मोरिस की खांड़ नहीं खाना ॥
तुम्हारा जनम बिगड़ जावेगा ॥ ३ ॥
सुरीती तज कोई कुरीती मतचालो ॥
तुम्हारा देश बिगड़ जावेगा ॥ ४ ॥
भारतके बाशी आपसमें फूट मतडारो ।
तुम्हारा राज बिगड़ जावेगा ॥ ५ ॥
काज और ब्याहमें धन ना लुटाओ ।
तुम्हारा माल बिगड़ जावेगा ॥ ६ ॥
सिखरजी पे बंगले बनने नहीं देना ॥
तुम्हारा तीरथ बिगड़ जावेगा ॥ ७ ॥
भारतके बासी मद्यामास मतखाओ ॥
तुम्हारा धर्म बिगड़ जावेगा ॥ ८ ॥
न्यायमत जल्दीसे निज सुध लीजे ॥
जमाना यूंहीं गुजर जावेगा ॥ ९ ॥

१८

तर्ज़ ॥ क़व्वाली ॥ यह कैसे बाल बिखरे हैं यह क्यों सूरत बनी ग़मकी ॥

हमें क्या काम कलजुगसे हमारा ढंग न्यारा है ॥
सार जिन धर्म दुनियांमें यही हमको पियारा है ॥ १ ॥
किया शर्धान तत्वोंका हटा मिथ्याथ अंधेरा ॥

सतासत होगया जाहिरमिटा भ्रमजाल सारा है॥ २ ॥
अमर है आतमा मरती न कटती है न जलती है॥
यही जिन राज ने भाषा यही निश्चय हमारा है॥ ३ ॥
फरिश्तों की कुदेवोंकी मददके हम नहीं ख्वाहां।
किसीका खौफ़ क्या हमको हमें अपना सहारा है॥ ४ ॥
हैं सब बातें अविद्याकी जो आपस झगड़ते हैं॥
बताओ तो असल में क्या तुम्हारा क्या हमारा है॥ ५ ॥
धर्म देश उन्नती चाहो करो परचार विद्याका।
कहे न्यामत जगतमें ज्ञानसे होता उजारा है॥ ६ ॥

१९

तर्ज़ ॥ गजरा बेचन वाली तू कहां चली ॥

सुनले चेतन ज्ञानी तू बानी भली। टेक।
बातशलका गजरा सबको पहनावो।
बातें करो सारे रली मिली॥ १ ॥
नगर नगरमें कोलिज बनावो।
विद्याफैला दो सारे गली गली॥ २ ॥
फजूल खर्ची की धूल उड़ावो।
बनज बढ़ाओ है तिजारत खुली॥ ३ ॥
घर घर करो जाके धर्मकी चर्चा।
तबतो खिलेगी जिनमत की कली॥ ४ ॥
न्यामत पर उपकार करो नित॥
सिरपे खड़ा है देखो काल बली॥ ५ ॥

२०

तर्ज़ ॥ लच्छी ॥ (पंजाबी चाल)

॥ सीता सतीका रावण को समझाना ॥

हा हारे पापी रावण हाथ ना लगा ॥ हाथ ना लगा-
मेरा मानले कहा-तेरी होनी है पुकारे मेरे हाथ ना लगा ॥ टेक ॥
हाहारे रानी तेरे आठ दश हजार ॥ आठ दश हजार-
लाया काहे परनार-सुनसुनरे हत्यारे-महापाप तैं किया ॥ १ ॥
हाहा तूदल बलका मान ना करै ॥ मान ना करै-
मतशीलको हरे-अपना वंश क्यों बिगाड़े-मनमें सोच तो जरा २।
हाहा जो था तू ऐसा जोधा बलवान-जोधा बलवान-
लाया क्यों ना स्वयम्बर मान-जिसमें बैठेथे सारे दरबारथालगा३
हाहारे वेगी मोहेराम पे पठा। राम पे पठा-
दे कलेशको मिटा-कहे न्यामत पुकारे इसी बातमें भला ॥ ४ ॥

२१

तर्ज़ ॥ मैं वही हूं प्यारी शकुंतला तुम्हें याद हो कि न याद हो ॥

यह वही है जैन धरम-दिला तुम्हें याद हो कि न याद हो।
शिव मार्ग जिसने दिखाया था तुम्हें याद हो कि न याद हो।१।
कभी जैनधर्मका जोर था जिन धर्मियोंका ही दौर था।
श्री जैजिनेन्द्रका शोर था तुम्हें याद हो कि न याद हो ॥ २ ॥
विद्याकी इसकी वह शान थी हरइक को इसकी कान थी।
चहुं ओर फिरती आनथी तुम्हें याद हो कि न याद हो ॥ ३ ॥
कभी जैन धर्मका राज था मुलकोंमें यह सरताज था।

तिहूं लोककी यही लाज था तुम्हें याद हो कि न याद हो ।४॥
हाय आज वक्त उलट गया बल जैन धर्मका घट गया ।
न्यामत ज़माना पलट गया तुम्हें याद हो कि न याद हो ॥५॥

॥ इति कलियुग लीला भजनावली समाप्तम् ॥
शुभम् ॥

नोटिस
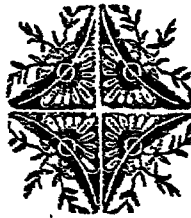
निम्न लिखित भाषा छंद बद्ध चरित्र प्राचीन जैन पंडितोंने रचेथे जिनको अब संशोधन करके मोटे काग़ज़ पर मोटे अक्षरों में सर्व साधारणके हितार्थ छपवाया है सब भाइयोंको पढ़कर धर्म लाभ उठाना चाहिये-यह दोनो जैन शास्त्र स्त्री पुरुषोंके लिये बड़े उपयोगी हैं, इनकी कविता प्राचीन है और सुन्दर हैं ॥ दोनो शास्त्र जैन मंदिरों में पढ़ने योग्य हैं:—

(१) भविसदत्त चरित्रः—यह जैन शास्त्र श्रीमान् पंडित बनवारी लालजी जैनने सम्वत् १६६६ में कविता रूप चौपाई आदि भाषा में बनाया था जिसको कई प्रतियों द्वारा मिलान करके शुद्धता पूर्वक छपवाया है और कठिन शब्दोंका अर्थ भी प्रत्येक सुफे के नीचे लिखा गया है इसमें महाराज भविसदत्त और सती कमलश्री व तिलकासुन्दरी का पवित्र चरित्र भले प्रकार दर्शाया गया है। सजिल्द मूल्य २)

(२) धन कुमार चरित्रः—यह जैन शास्त्र श्रीमान् पंडित खुशहाल चन्द जी जैन ने कविता रूप चौपाई आदि भाषा में रचा था इसको भी भले प्रकार संशोधन करके छपवाया है इसमें श्रीमान् धनकुमार जी का जीवन चरित्र अच्छी तरह दिखाया गया है। सजिल्द मूल्य १।)

(३) नमोंकार मंत्रः—फूलदार बढ़िया मोटा काग़ज़ मू० ~)

पुस्तक मिलनेका पताः—

बा० न्यामतसिंह जैनी सेक्रेटरी डिस्टिरिक्ट बोर्ड हिसार।

मु० हिसार (जिला खास हिसार)

(पंजाब)

(नोटिस)

न्यामतसिंह रचित जैन ग्रन्थमाला के वह अंक जिनके सामने मूल्य लिखा गया है छप कर तय्यार हैं—बाक़ी अंक भी शीघ्र ही प्रकाशित होने वाले हैं:—

		नागरी	उर्दू
१ जिनेन्द्र भजन माला	...	।=)	०
२ जैन भजन रत्नावली	...	।)	०
३ मूर्ति मंडन प्रकाश (जैन भजन पुष्पांजली)	...	।)	०
४ जिनेन्द्र पूजा	...	=)	०
५ कर्ता खंडन प्रकाश (ईश्वर सरूप दर्पण)	...	॥)	०
६ भविसदत्त तिलकासुन्दरी नाटक	...	१॥)	॥)
७ जैन भजन मुक्तावली	...	।)	०
८ राजल भजन एकादशी	...	=)	०
९ स्त्री गान जैन भजन पचीसी	...	=)	०
१० कलियुग लीला भजनावली	...	=)	-)॥
११ कुन्नी नाटक	...	=)	०
१२ चिदानन्द शिवसुन्दरी नाटक	...	॥।)	।=)
१३ अनाथ रुदन	...	-)	०
१४			
१५			
१६			
१७			
१८ जैन भजन शतक	...	।=)	०
१९ थ्येटरीकल जैन भजन मंजरी	...	≡)	=)
२० मैनासुन्दरी नाटक (बढ़िया मोटे काग़ज़ मोटे अक्षर छटी अडीशन)	...	२॥)	०

पुस्तक मिलने का पता—

न्यामतसिंह जैनी सेक्रेटरी डिस्टिरिक्ट बोर्ड मु॰ हिसार (पंजाब)

Niamat Singh Jain,

Secretary District Board, HISSAR (Punjab)